

डॉ. इलेन फिलिप्स, पुराने नियम का साहित्य, व्याख्यान 25, अय्यूब

© 2024 एलेन फिलिप्स और टेड हिल्डेब्रांट

खैर, सभी को सुप्रभात। सुप्रभात। मुझे लगता है कि घोषणाएँ काफी सीधी-सादी हैं।

वे सभी पेपर से संबंधित हैं। मैं फिर से यही कहना चाहता हूँ कि मैं जानता हूँ कि मैं इस घोड़े को बहुत पीट रहा हूँ, लेकिन हर साल, इसमें एक समस्या होती है। सुनिश्चित करें कि आप अपने एक-पृष्ठ के पेपर के साथ अपना प्रारंभिक कार्य जमा करें।

मैं इस बात पर ज़ोर नहीं दे सकता। जैसा कि मैंने पहले कहा, यह हस्तलिखित रूप में भी आ सकता है। आप चाहें तो इसे अपने पेपर के साथ जमा कर सकते हैं।

अगर आपने इसे वर्ड प्रोसेस कर लिया है, तो इसे मुझे ईमेल करें, एक ही दस्तावेज़, अलग-अलग छोटी किशतों में नहीं। शुक्रवार सुबह 9 बजे तक इसे जमा करने की कोई वास्तविक बाध्यता नहीं है, लेकिन इसे 5:30 बजे तक जमा करना होगा। उस समय मैं कैंपस से निकलता हूँ, और यही समय होता है जब मैं सो जाता हूँ। इसलिए इसे ध्यान में रखें और इसके प्रति सजग रहें।

मैं अपना मेलबॉक्स चेक करूँगा, अपने दरवाजे के नीचे जाँच करूँगा, लेकिन 5.30 बजे, आप में से जो लोग हार्ड कॉपी जमा कर रहे हैं, उनके लिए यह सब खत्म हो जाएगा। और साथ ही, बेशक, यह बहुत अच्छा है कि ईमेल अटैचमेंट समयबद्ध हैं, और इसलिए मुझे ठीक से पता है कि वे कब आते हैं। किसी भी दर पर, मुझे नहीं लगता कि मुझे कागजात के बारे में कुछ और कहने की ज़रूरत है।

आज हम गाने की कोशिश करेंगे, और हम कुछ नया गाने जा रहे हैं। और यह वास्तव में अय्यूब से आया है। इसीलिए हम आज इसे गा रहे हैं।

क्या यह समझ में नहीं आता? यह बात बिलकुल सही है। मेरा मतलब है, मैं आपके लिए अय्यूब के एक मित्र के कथन की एक छोटी सी पंक्ति पढ़ने जा रहा हूँ। अय्यूब के मित्र बहुत सी अद्भुत बातें कहते हैं।

वे जो कहते हैं उसका गलत अर्थ निकालते हैं। यह अय्यूब 25, श्लोक 2 से आता है, जिसमें कहा गया है कि प्रभुत्व और भय परमेश्वर का है। वह स्वर्ग की ऊंचाइयों में व्यवस्था स्थापित करता है।

अब, वह स्वर्ग की ऊंचाइयों में व्यवस्था स्थापित करता है, जो वहाँ ऊपर है। शालोम का यहाँ NIV में एक व्यवस्था के रूप में अनुवाद किया जा रहा है, और यह पूरी तरह से उचित है। मैंने इसे यहाँ शांति के रूप में पढ़ा है, इसलिए आप शालोम, शांति को समझ सकते हैं।

यह सामान्य पत्राचार है। तो, जो अपनी ऊंचाइयों में शांति बनाता है, ओसेह शालोम बिम्रोमाव। अब, हम इस पूरी बात पर बात करने जा रहे हैं, और फिर, मानो या न मानो, मैं इसे आपके लिए गाने की कोशिश करने जा रहा हूँ।

कैरी को अभी यहाँ होना चाहिए, लेकिन हम देखेंगे कि हम क्या कर सकते हैं। ओसेह शालोम बिम्रोमाव। ओसेह शालोम बिम्रोमाव।

कौन या ओसेह शालोम अलेइनु? दूसरे शब्दों में, जो स्वर्ग की ऊंचाइयों में व्यवस्था स्थापित करता है, वह हमारे लिए भी व्यवस्था बनाएगा, या हमारे लिए शांति भी लाएगा। तो, कौन का मतलब है वह। वह ऐसा करने जा रहा है।

वे'अल कोल यिसरेल, वे'इमरु। यह अनिवार्य है। और कहो, वे'इमरु, वे'इमरु, आमीन।

और आमीन का मतलब? इसका मतलब आमीन है, हाँ। लेकिन इसका वास्तव में मतलब है कि इसकी पुष्टि हो। यह पक्का है। इसकी पुष्टि हो।

और फिर, एक तरह की कोरस चीज़ है जो उठती है, और यह चलती है, या ओसेह शालोम, या ओसेह शालोम, उसे शांति बनाने दो, उसे शांति बनाने दो, शालोम अलेइनु, वे'अल कोल यिसरेल। तो, माइक्रोफोन के बिना, जो वास्तव में विकृत होगा, और फिर हम अय्यूब पर आएँगे।

चलो प्रार्थना करते हैं।

स्वर्ग में हमारे पिता, हम अक्सर अपने मुद्दों, चुनौतियों और समस्याओं में उलझे रहते हैं। और हम इस तथ्य से अपनी आँखें हटा लेते हैं कि आप वास्तव में ब्रह्मांड के स्वामी हैं, और आप स्वर्ग में व्यवस्था, पूर्ण व्यवस्था बनाते हैं। इसलिए, हम इसके लिए आभारी हैं, और हम प्रार्थना करते हैं कि आप आज हमारा ध्यान उन गहन सत्यों की ओर आकर्षित करें, न केवल तब जब हम अय्यूब की पुस्तक का अध्ययन करते हैं और कैसे अय्यूब भयानक पीड़ा और मृत्यु की संभावना से जूझता है।

लेकिन प्रभु, इस लेंटन सीजन में भी उन सच्चाइयों को हमारे लिए वास्तविक बनाइए। हमारे मन को इस तथ्य की ओर आकर्षित करें कि आपने मसीह के माध्यम से हमारे साथ व्यवस्था और शांति स्थापित की है। हम प्रार्थना करते हैं कि आप उन लोगों के साथ वास्तव में कोमल और कोमल रहें जो संघर्ष कर रहे हैं और परीक्षणों और दर्द और निराशा से जूझ रहे हैं।

उनके दिलों में भी शांति लाओ और हमें अच्छे दोस्त बनने में मदद करो। पिता, हम ये सब बातें मसीह की दया के कारण माँगते हैं। हम उसके नाम से प्रार्थना करते हैं। आमीन।

खैर, हम अय्यूब के बारे में बात करने जा रहे हैं। दिलचस्प बात यह है कि हम सबसे पहले इसकी समीक्षा करने जा रहे हैं।

मुझे लगा कि यहाँ एक समीक्षा स्लाइड है। हमें पहले समीक्षा करनी चाहिए, और फिर हम अय्यूब पर जाएँगे। नीतिवचन, बेशक, उपदेशात्मक है।

यह सिखाता है। और हमने पिछली बार नीतिवचन की पुस्तक का परिचय देते समय इस तथ्य के बारे में बात की थी कि वे पहले छह छंद भी, संक्षेप में, जीवन के पाठ्यक्रम के लिए एक पाठ्यक्रम हैं। अय्यूब और सभोपदेशक, और निश्चित रूप से, सभोपदेशक वह है जिसे हम शुक्रवार को पढ़ने जा रहे हैं, अटकलें और दार्शनिक हैं, वे सभी प्रश्न उठाते हैं जिन्हें हमने पिछली बार संक्षेप में संबोधित किया था।

और फिर अंत में, गीतों का गीत गीतात्मक कविता, प्रेम कविता होगी, जिसे हम शुक्रवार को एक्लेसियास्ट्स और गीतों के गीत के साथ करने की कोशिश करेंगे। अब, मैंने कुछ समय पहले जो कहना शुरू किया था, वह यह है कि क्योंकि अय्यूब इनमें से कुछ गहन, सट्टा, दार्शनिक प्रश्न उठाता है, मैं इसके साथ थोड़ा अलग तरीके से पेश आना चाहता हूँ और पहले, ओह, 20 मिनट या उससे अधिक समय आपसे प्रश्न पूछने में बिताना चाहता हूँ। जाहिर है, अगर हम वास्तव में इस पाठ और इसके द्वारा उठाए गए मुद्दों से निपट रहे हैं, तो यह मेरे लिए उचित नहीं है कि मैं आपको इस पर केवल व्याख्यान दूँ।

संभवतः बाइबल के किसी भी पाठ के साथ ऐसा करना उचित नहीं है, लेकिन विशेष रूप से अय्यूब के साथ नहीं। इसलिए, मेरे पास कुछ प्रश्न हैं, और मैं निश्चित रूप से आपके प्रश्नों को आमंत्रित करता हूँ क्योंकि हम इस पर कुछ परिचयात्मक कार्य शुरू कर रहे हैं। यह सिर्फ एक त्वरित चित्र है, जो अय्यूब की पुस्तक के कई कलात्मक निरूपणों में से एक है।

यहाँ, आप उसे बहुत कष्ट में देख सकते हैं, उसकी पत्नी पृष्ठभूमि में है, उसका घर बिखरा हुआ है, और उसके दोस्त, जो, जैसा कि हम जानते हैं, हर तरह से बहुत ही खराब सलाहकार साबित होते हैं। हम इस पर थोड़ी देर में चर्चा करेंगे। लेकिन सबसे पहले कुछ सवाल।

अय्यूब का उद्देश्य क्या है? आप इसे पढ़ना चाहेंगे। बाइबल में यह क्यों है? इसका उद्देश्य क्या है? इसमें 42 अध्याय हैं, जिसका मतलब है कि इसमें देखने लायक कुछ है। आगे बढ़ो, जिंजर।

ठीक है, तो यह किसी ऐसे व्यक्ति की झलक है जो आत्म-दया से भरा हुआ है। तो, आप सुझाव दे रहे हैं, अगर मैं आपको सही सुन रहा हूँ, कि यह एक सबक है कि कैसे नहीं होना चाहिए? शायद? शायद, ठीक है, हम इस पर आगे बढ़ेंगे। सुझाना।

तो, यह उस व्यक्ति के लिए एक सबक है जो विनम्रता से, अपनी परिस्थितियों के बावजूद, परमेश्वर की स्तुति करता है। आप इन दोनों को एक साथ कैसे जोड़ेंगे? और वैसे, जैसा कि हम इसे पढ़ते हैं, ऐसे कई स्थान हैं जहाँ अय्यूब ने परमेश्वर से जो कहा वह ऐसा नहीं लगता कि वह परमेश्वर की स्तुति कर रहा है। मैं उस पर वापस आऊँगा।

मैं इस पर वापस आऊँगा। मैरी। यह बाइबल में पढ़ी गई अन्य कहानियों की तरह नहीं है, कि अय्यूब इतना ईमानदार था।

ठीक है, तो यह किसी ऐसे व्यक्ति की कहानी है जो ईश्वर के प्रति पूरी तरह से वफादार है, और वह ईमानदार है। तो, दूसरे शब्दों में, आप जिंजर से भी असहमत हैं क्योंकि वह कहती है कि वह बिल्कुल पसंद करने लायक नहीं है और इस तरह की बातें। क्या मैं कुछ समझ रहा हूँ? हर बार नहीं।

सभी नहीं, ठीक है, यह सब ठीक है। मेरा मतलब है, इस पुस्तक में हम जो चीजें देख रहे हैं, उनमें से एक यह है कि लंबे समय तक पीड़ित होने के बारे में कई अलग-अलग दृष्टिकोण हैं। यह तथ्य कि हमारे पास अध्याय हैं। मूल रूप से तीन, 31 तक, हमें बताता है, यहां तक कि साहित्य के रूप में भी, कि यह उसके लिए एक दीर्घकालिक मुद्दा है।

जब आप इन्हें पढ़ते हैं, तो आपको लगता है कि अब मैं अय्यूब और उसके दोस्तों के बारे में काफी कुछ कह चुका हूँ। हाँ, आगे बढ़ो, केलिन। ठीक है, तो यह हमें याद दिलाता है कि हमारे आस-पास और खुद में जो भी दुख हम देखते हैं, अय्यूब उसका एक छोटा सा सूक्ष्म रूप है, भगवान ऐसा होने दे रहे हैं।

अब, बेशक, हम इसे शुरूआती अध्यायों में देखेंगे, है न? खैर, मैं बस एक और, खैर, सवालों के बीच एक तरह के अंतराल पर आगे बढ़ता हूँ। परिभाषा। थियोडिसी एक ऐसा शब्द है जिसे अक्सर अय्यूब की पुस्तक के कारणों में से एक, उद्देश्यों में से एक के रूप में प्रस्तुत किया जाता है।

दूसरे शब्दों में, कुछ लोग कहते हैं कि यह एक थियोडिसी के रूप में काम करता है। और इसलिए, अगर हम अय्यूब की पुस्तक के संबंध में इस शब्द को लेकर चर्चा कर रहे हैं, तो इसकी परिभाषा होना मददगार होगा। तो यह यहाँ है।

यह ग्रीक भाषा से आया है, जिसका अर्थ है, मूल रूप से, ईश्वर को न्यायोचित ठहराना। और इसलिए, मूल रूप से, थियोडिसी क्या है, यह ईश्वर की अच्छाई और बुराई के अस्तित्व के सामने उसकी सर्वशक्तिमानता का बचाव है। दूसरे शब्दों में, यदि ईश्वर वास्तव में अच्छा है और यदि वह वास्तव में शक्तिशाली है, तो वह बुराई को अस्तित्व में क्यों रहने देता है? यही प्रश्न हैं, है न? और केलन इस बात पर कुछ हद तक इस संदर्भ में बात कर रहे थे कि यहाँ एक ऐसी कहानी है जो किसी ऐसे व्यक्ति के बारे में है जो बहुत पीड़ा में है, और ईश्वर न केवल उसे अनुमति दे रहा है, बल्कि ऐसा लगता है कि वह उसे प्रेरित भी कर रहा है, जैसा कि हम अध्याय एक को पढ़ते हैं, विशेष रूप से।

अब, क्या यह आपको समझ में आता है? हमारा अगला सवाल है, क्या अय्यूब एक थियोडिसी है? क्या इस पुस्तक में जो कुछ भी हो रहा है उसका एक हिस्सा मानवीय पीड़ा के सामने ईश्वर की भलाई और उसकी सर्वशक्तिमत्ता का बचाव है? केटी, आप सिर हिला रही हैं। क्या आप ज़ोर से सिर हिलाना चाहती हैं? मुझे लगता है कि चार अध्यायों में निश्चित रूप से ईश्वर की सर्वशक्तिमत्ता का बचाव है। मैं सबसे आखिरी अध्याय के बारे में बात कर रहा हूँ, लेकिन ये चार अध्याय अंतिम भाग की ओर ले जाते हैं, जहाँ यह ईश्वर और उसके द्वारा किए गए सभी कार्यों को देखने जैसा है।

उसकी अविश्वसनीय शक्तियों को देखिए। वह जो कुछ भी करता है, वह आदमी, वह कभी भी ऐसा करने की शुरुआत भी नहीं कर सकता। क्या मैं यह भी समझ सकता हूँ कि वह क्या कर सकता है? तो स्पष्ट रूप से, हम यह समझ रहे हैं कि यह पाठ ईश्वर की शक्ति, उसकी पूर्ण शक्ति और सर्वशक्तिमत्ता को व्यक्त करता है।

क्या यह उसकी अच्छाई को दर्शाता है? क्या इसका उद्देश्य ऐसा करना है? आप उन संप्रभु क्षेत्रों में शक्ति प्राप्त कर सकते हैं, लेकिन पीड़ा, अय्यूब की निरंतर पीड़ा, जो कि, जैसा कि आप अध्याय एक और दो को पढ़ने से जानते हैं, ईश्वर द्वारा अनुमति नहीं दी गई है? ऐसा लगता है कि यह ईश्वर द्वारा शुरू किया गया है। क्या यह उसकी अच्छाई को दर्शाता है, मैकेना? मुझे लगता है कि यह बताता है कि ईश्वर कितना वफादार है।

यह बिलकुल वैसा ही है जैसे भगवान को गद्दार होने की ज़रूरत नहीं है। ठीक है। हाँ, कैसिया, कैसिया।

मुझे लगता है कि इसके साथ ही, मुझे लगता है कि हमें ईश्वर की अच्छाई को देखने और हमारे लिए ईश्वर की इच्छा को देखने के लिए, मनुष्य के रूप में, हमारे पास एक स्वतंत्र इच्छा होनी चाहिए। इसलिए, हमें अपनी छोटी-छोटी शिकायतें मिलती हैं। तो, दूसरे शब्दों में, आप कह रहे हैं कि हम वास्तव में ईश्वर की सराहना करते हैं जब हम पूरी तरह से निर्भरता और विनम्रता और विनम्रता और इसी तरह की अन्य चीजों तक सीमित हो जाते हैं? हो सकता है।

मैं आपको पढ़कर सुनाता हूँ। मैं आज एक ऐसी किताब पढ़ने जा रहा हूँ जो मुझे पिछले कई सालों से बहुत उपयोगी लगी है। यह किताब है द विजडम ऑफ प्रोवर्ब्स, जॉब, एंड एक्लेसियास्ट्स, जो डेरेक किडनर नामक विद्वान द्वारा लिखी गई है, जिसका नाम मैंने समय-समय पर लिया है क्योंकि वह पुराने नियम के अच्छे विद्वान हैं।

और वह निम्नलिखित बातें कहता है, और वैसे, यह आप में से उन लोगों को थप्पड़ मारने के लिए नहीं है जो यह कहने की कोशिश कर रहे हैं कि यह एक थियोडिसी है। हो सकता है कि ऐसा हो, लेकिन किडनर यहाँ कुछ और कहने जा रहा है। वह कहता है कि यह पुस्तक थियोडिसी नहीं है, ठीक है? क्षमा करें, केटी।

यह पुस्तक ईश्वरवादी नहीं है क्योंकि मनुष्य खुद को ईश्वरीय बनाए बिना ईश्वर को उचित ठहराने का अधिकार खुद को नहीं दे सकता। दूसरे शब्दों में, एक बार जब हम यह पता लगाने की कोशिश करना शुरू करते हैं, तो हम ईश्वर की अच्छाई और ईश्वर की शक्ति और सभी दुखों को इस तरह से समझ पाते हैं। कुछ मायनों में, हम अपनी मानसिक क्षमताओं को ईश्वर से ऊपर रख रहे हैं।

वह आगे कहते हैं, जो शायद मैरी के कहने से मेल खाता है, यह एक आध्यात्मिक तीर्थयात्रा की कहानी है जिसमें अय्यूब को खुद की कैद और अपने काल्पनिक अधिकारों से मुक्त किया गया ताकि वह अपने समर्पण के क्षण में बच सके और ईश्वर के आने से वह पा सके जो उसे परंपरा या नैतिकता के माध्यम से नहीं मिला था। और फिर मैं एक या दो पेज छोड़ने जा रहा हूँ। वह कहते हैं कि अय्यूब के जुनून में, हम सबसे बड़े पीड़ित का प्रारंभिक रेखाचित्र देखते हैं।

अय्यूब ने जो चाहा था, वह वास्तव में हुआ है। ईश्वर स्वयं हमारे साथ अकेलेपन के नरक में शामिल हो गया है। यहाँ अय्यूब और मानवता के सभी अय्यूबों के लिए अंतिम उत्तर है, ठीक है? तो, वह कह रहा है, यहाँ तक कि कुछ छोटे तरीकों से भी, जो हम अय्यूब को यहाँ सहते हुए देखते हैं, वह मसीह के दुखों के लिए एक छोटा सा संकेत है जब वह वास्तव में आता है क्योंकि अय्यूब किसी ऐसे व्यक्ति की तलाश और लालसा कर रहा था जो मध्यस्थता करे, मध्यस्थता करे, उसका उद्धारक बने।

ऐसा वास्तव में तब होता है जब हमारे पास देहधारी शब्द की सेवकाई होती है। तो, किडनर का यह एक दिलचस्प विचार है। खैर, हमारे पास कुछ और सवाल हैं।

मैं किसी भी तरह से यह नहीं कह रहा हूँ कि हम इनमें से हर एक सवाल का जवाब देंगे। हाँ, रेबेका। मैं बस सोच रहा था, क्या यह वैसा ही है जैसा उन्होंने थियोडिसी की अपनी परिभाषा के बारे में कहा था? क्या यह थियोडिसी जैसी कोई चीज़ नहीं है? क्या हमें इसी का इंतज़ार करना चाहिए? हाँ, यह एक बढ़िया सवाल है।

क्या ईश्वरवाद का कोई भी प्रयास मानव जाति की ओर से खुद को ईश्वर से ऊपर रखने का एक अहंकारी प्रयास है? हो सकता है। ऐसा लगता है कि वह यही कह रहे हैं। वह निश्चित रूप से यह कह रहे हैं कि अय्यूब की पुस्तक के हमारे मूल्यांकन के संबंध में, हम उस तरह से नहीं सोच सकते।

लेकिन आप इसे इसके तार्किक निष्कर्ष तक ले जाने में सही हैं। मुझे नहीं पता कि किडनर सामान्य रूप से थियोडिसी की पूरी अवधारणा के बारे में क्या कहते हैं। उनसे यह पूछना एक दिलचस्प सवाल होगा।

वैसे, वह अभी भी जीवित है। वह कैम्ब्रिज, इंग्लैंड में रहता है, यहाँ नहीं। खैर, यहाँ एक और है।

भगवान बुराई से कैसे निपटते हैं? आप जानते हैं, वह इसे दबाता नहीं है। कभी-कभी यह वास्तव में जीवन को बर्बाद करने की अनुमति देता है। ट्रेवर।

मेरा एक सवाल है। हाँ। ऐसा लगता है कि इसे एक दूसरे के स्थान पर इस्तेमाल किया जाता है कि भगवान ने बुराई की अनुमति दी और भगवान ने बुराई को लाया।

तो, मैं सोच रहा हूँ, क्या दोनों में कोई अंतर है? मुझे लगता है कि भगवान द्वारा बुराई लाना और बुराई को होने देना, दोनों में बहुत अंतर है। और बेशक, हमें पहला वाला बहुत पसंद नहीं है, है न? नहीं। ठीक है।

यह एक बढ़िया सवाल है। मैं सिर्फ़ दो बातें कहना चाहता हूँ, हालाँकि हम चाहें तो इस पर पूरा घंटा बिता सकते हैं। मुझे लगता है कि अगर हमारे पास कुछ ऐसा है जो परमेश्वर की संप्रभुता से बाहर है तो यह एक समस्या होगी।

क्योंकि परमेश्वर सर्वोच्च है, इस बारे में कोई सवाल ही नहीं है। वह सर्वोच्च रूप से अच्छा है।

मेरे विचार में, इस बारे में कोई सवाल ही नहीं है। लेकिन उस अच्छी संप्रभुता की जटिलता के बारे में कुछ ऐसा है जो वास्तव में बुराई को अपने हिस्से के रूप में शामिल करता है। और दिलचस्प बात यह है कि यह मेरी दूसरी बात है।

यशायाह अध्याय 45, श्लोक सात। इसमें उस परमेश्वर के बारे में बताया गया है जो प्रकाश और बुराई का सृजन करता है। और ये वे शब्द हैं जिनका प्रयोग वहाँ किया गया है।

अब, आप इन सबके साथ कैसे काम करते हैं, यह एक और सवाल है, और यह दार्शनिकों और धर्मशास्त्रियों के लिए है। फिर से, मैं किसी भी तरह से भगवान की अच्छाई को बदनाम करने की कोशिश नहीं कर रहा हूँ।

शायद परमेश्वर की अच्छाई हमारी कल्पना से कहीं ज़्यादा बड़ी है। और जैसा कि आप जानते हैं, मुझे लगता है कि भजन 76 में कहा गया है, यहाँ तक कि मनुष्यों का क्रोध भी उसकी प्रशंसा करेगा। वे सभी चीज़ें जिन्हें हम आंतरिक रूप से बुरा मानते हैं, परमेश्वर किसी न किसी तरह से अच्छे के लिए इस्तेमाल करने जा रहा है।

भजन में यही कहा गया है। और रोमियों 8, 28 पर आधारित संप्रभुता की हमारी सामान्य परिभाषाएँ भी यही कहती हैं। सभी चीज़ें मिलकर भलाई के लिए काम करती हैं।

और परमेश्वर उन चीज़ों में काम कर रहा है। वे उसके नियंत्रण से बाहर नहीं हैं। वे ऐसी चीज़ें नहीं हैं जिन पर उसका हाथ नहीं है।

इसलिए, मैंने आपके प्रश्न का उत्तर नहीं दिया है क्योंकि मुझे वास्तव में नहीं पता कि इसे कैसे जोड़ा जाए, लेकिन ये कुछ ऐसी बातें हैं जिन पर हमें विचार करने की आवश्यकता है। ईश्वर बुराई से कैसे निपटता है? मैं आपको किडनर का एक और छोटा सा उद्धरण देता हूँ। फिर से, यह इस पर अंतिम शब्द नहीं है, लेकिन वह मुझसे कहीं बेहतर बातें कहता है।

इसलिए, उनकी बुद्धि का लाभ उठाना अच्छा है। जहाँ हम यह तर्क देना चाहेंगे कि सर्वशक्तिमान को बुराई को उसके पहले प्रकट होने पर ही समाप्त कर देना चाहिए था, वहीं परमेश्वर ने उसे कुचलने का नहीं बल्कि उससे जूझने का तरीका चुना - और ऐसा ताकत के बजाय कमज़ोरी में करना था।

चमत्कारों के बजाय मनुष्यों के माध्यम से और अय्यूब के संदर्भ में महंगी अनुमतियों के माध्यम से, सीधे इनकार के बजाय। मामले को अपने शब्दों में रखते हुए, हम कह सकते हैं कि ईश्वर निष्पक्ष लड़ाई में बुराई पर विजय पाने के लिए दृढ़ संकल्पित है, वीटो द्वारा नहीं। और, बेशक, हम इसे अपने जीवन में देखते हैं।

हम इसे निश्चित रूप से यीशु के जीवन में देखते हैं, जो उसी संदर्भ में बुराई से लड़ने के लिए मनुष्य बन जाता है, जिस संदर्भ में आप और मैं उससे लड़ते हैं, यही कारण है कि इब्रानियों के

लेखक एक महान महायाजक के बारे में बात करते हैं, जिसने मानवता को अपनाया और उन्हीं चीज़ों से जूझता है जिनसे हम जूझते हैं। यही बात इब्रानियों के लेखक ने अध्याय पाँच में कही है, और फिर अध्याय सात में आगे बढ़ते हुए। तो, इस संबंध में कुछ दिलचस्प विचार हैं।

सवाल यहीं खत्म नहीं होते। क्या आप अभी भी थोड़ा और सोचना चाहते हैं? शायद। हम ईश्वर के बारे में क्या सीखते हैं? मैं इस पर थोड़ा आगे बढ़ चुका हूँ, लेकिन चलिए इसे थोड़ा और आगे बढ़ाते हैं।

हम ईश्वर और विरोधी के बारे में क्या सीखते हैं, जो शैतान का अनुवाद है, हाँ शैतान हिब्रू में विरोधी या विरोधी है। और वह व्यक्ति है जो अध्याय एक और दो में ईश्वर की उपस्थिति में आता है। पहले दो अध्यायों से हम ईश्वर, विरोधी और अय्यूब के बारे में क्या सीखते हैं? क्या कुछ ऐसा है जो आपको समझ में आता है, रेबेका? क्या आप उन सभी के लिए एक ही चीज़ के बारे में पूछ रहे हैं? ओह, नहीं, हर एक के बारे में कुछ।

उनमें से हर एक के बारे में बातें हमारे लिए यह तस्वीर बनाती हैं क्योंकि यह, ज़ाहिर है, कविता में सामने आने वाली पूरी चीज़ का परिचय है। यह हमारा कथात्मक परिचय है, जिसे अय्यूब कभी नहीं जानता, ज़ाहिर है। आगे बढ़ो।

खैर, शैतान और विरोधी, यह वादे में अभी भी कुछ आम बात थी या ऐसा ही कुछ। हाँ, उनका विरोधी परमेश्वर की उपस्थिति में प्रकट होता है, है न? और ऐसा लगता है कि यह कुछ ऐसा है जो सिर्फ़ एक बार नहीं होता। हो सकता है कि हमारे साथ ऐसा एक से ज़्यादा बार हुआ हो।

एक दिन, अध्याय एक, श्लोक छह, परमेश्वर के पुत्र, मैं जानता हूँ कि आपके NIV का अनुवाद स्वर्गदूतों का है, लेकिन एक दिन परमेश्वर के पुत्र प्रभु के सामने खुद को प्रस्तुत करने आए। और विरोधी, शैतान भी उनके साथ आया। और प्रभु ने शैतान से पूछा, तुम कहाँ से आए हो? और इसी तरह और भी बहुत कुछ।

तो, ऐसा लगता है कि यह कुछ ऐसा है जो असाधारण नहीं है। यह यहाँ के दृश्य का हिस्सा है। और किसी तरह, इस विरोधी की स्वर्ग के सिंहासन कक्ष तक पहुँच है।

हम इसे पुराने नियम के शास्त्रों में फिर से देखेंगे। यह एकमात्र स्थान नहीं है जहाँ विरोधी परमेश्वर की उपस्थिति में है। हम परमेश्वर, विरोधी और अय्यूब के बारे में और क्या सीखते हैं? आप अय्यूब के बारे में क्या सीखते हैं? मुझे खेद है, मैट, आगे बढ़ो।

ठीक है, वह अपने बच्चों के बारे में चिंतित है, है न? और मैं आपको इस बारे में और बताने जा रहा हूँ। अपने बच्चों की आध्यात्मिक भलाई के लिए अपनी गहरी चिंता के परिणामस्वरूप वह क्या करता है? हाँ, अध्याय पाँच। जब दावत का दौर खत्म हो जाता था, हाँ, यीशु, अय्यूब उन्हें भेजते थे और उन्हें शुद्ध करवाते थे।

सुबह-सुबह वह होमबलि चढ़ाता था और उसके साथ-साथ उनके लिए प्रार्थना भी करता था। इसलिए, हमारे पास अय्यूब एक मध्यस्थ है। उस पर ध्यान दें, यह महत्वपूर्ण है।

अय्यूब के बारे में हम और क्या जानते हैं? यह अय्यूब का वर्णन करने में मानक अभिव्यक्ति की तरह है। यह पद्य में दिखाई देता है, ठीक है, यह इन पहले दो अध्यायों में कई बार दिखाई देता है। सारा, क्या आप कुछ ऐसा कहने जा रही थीं जिसका मानक अभिव्यक्ति से कोई लेना-देना नहीं था? खैर, मुझे यकीन नहीं है कि यह मानक अभिव्यक्ति है।

मैं बस इतना ही कहने जा रहा था कि वह बहुत अच्छे हैं। ठीक है, हम जानते हैं कि वह अच्छे हैं, लगता है कि वह नेतृत्व की स्थिति में हैं क्योंकि हम किताब को आगे बढ़ते हुए देखते हैं। और यह निश्चित रूप से परिस्थितियों का हिस्सा है, लेकिन दिलचस्प बात यह है कि पाठ में इस बात पर जोर नहीं दिया गया है।

ट्रेवर। हाँ, और यह उसकी धार्मिकता के बारे में क्या कहता है? वह अब तक का सबसे धार्मिक व्यक्ति था, है न। हाँ, माफ़ करें।

यहाँ, इन दिनों में से एक दिन मैं अपना ऐसा ही व्याख्यान दूंगा, लेकिन मैं आज ऐसा नहीं करूँगा, चिंता मत करो। तुम अकेले लक्ष्य नहीं हो, मेरा विश्वास करो। यहाँ वह सूची है जो सामने आती है।

निर्दोष, ईमानदार, ईश्वर से डरने वाला और बुराई से दूर रहने वाला। क्या आपको यह देखना याद है? चार विशेषताएँ : निर्दोष, ईमानदार, ईश्वर से डरने वाला, बुराई से दूर रहने वाला। और यह एक से ज़्यादा बार दिखाई देता है।

हम उसे एक सच्चे ईश्वरीय व्यक्ति के रूप में देखते हैं। क्या हमें इन पात्रों के बारे में कुछ और जानने की ज़रूरत है जो स्वर्ग के हमारे दर्शन का हिस्सा हैं, खासकर पहले दो? आगे बढ़ो, मैट। हाँ, शैतान को अनुमति लेनी होगी, अगर तुम चाहो तो।

लेकिन मुझे, मैं बस कुछ कहना चाहता हूँ जो मैंने थोड़ी देर पहले कहना शुरू किया था। यह परमेश्वर ही है जो कहता है, अरे, क्या तुमने मेरे सेवक अय्यूब पर विचार किया है? मेरा मतलब है, परमेश्वर ही है जो इस ईमानदार व्यक्ति की ओर शत्रु का ध्यान आकर्षित कर रहा है। और फिर, बेशक, शैतान कहता है, ठीक है, बेशक, तुम जानते हो, वह तुमसे डरता है, वह अच्छा है, वह बुराई से दूर रहता है क्योंकि उसे इससे लाभ मिलता है।

मूल रूप से यही हो रहा है। वह कहता है, क्या तुमने उस पर कोई बाड़ नहीं लगाई है? तुमने उसे आशीर्वाद दिया है, वगैरह, वगैरह। और फिर प्रभु अनुमति देता है, महंगी अनुमति, अगर आप चाहें, तो किडनर के वाक्यांश पर वापस जाने के लिए, दोनों ही मामलों में शैतान की अय्यूब की हर चीज़ को नष्ट करने की क्षमता के संदर्भ में, और फिर अंत में, अध्याय दो में, खुद अय्यूब को नष्ट करने की।

तो ये महत्वपूर्ण बातें हैं जिन्हें ध्यान में रखना चाहिए। भगवान वास्तव में यहाँ एक बहुत बड़ी परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं। यह एक बहुत बड़ी परीक्षा है।

और मुझे उम्मीद है कि हम इस बारे में और भी कुछ कहेंगे, अगले सवाल में। मैंने अभी-अभी अय्यूब के गुणों के बारे में बात की है, जैसे कि वह निर्दोष, ईमानदार, परमेश्वर का भय मानने वाला और बुराई से दूर रहने वाला था।

क्या इसका मतलब यह है कि वह पापहीन है? मैं उसके सिर को हिलाता हुआ देख रहा हूँ। आपको यह कैसे पता? वह खुद अपने पाप के बारे में बात करने जा रहा है। अध्याय सात, विशेष रूप से श्लोक 21 और 22 में, हम अभी वहाँ नहीं देखने जा रहे हैं, लेकिन अय्यूब किसी भी तरह से पापहीन होने का दावा नहीं कर रहा है।

उसकी झल्लाहट यह है कि आखिर मैंने इतना भयानक काम कैसे किया कि मुझे अपने जीवन में इतने भयानक परिणाम भुगतने पड़े? यह बात उसके दिमाग में नहीं बैठती। खैर, चलिए आगे बढ़ते हैं। अभी सवालों का सिलसिला खत्म नहीं हुआ है।

शैतान ने मूल रूप से कहा, अरे, तुम जानते हो, अय्यूब उससे जो पाता है उसके लिए अच्छा है। क्या ये अक्सर हमारे उद्देश्य नहीं होते? है न? कुछ मायनों में, कुछ हद तक, यह वाचा में शामिल था। लैव्यव्यवस्था 26, व्यवस्थाविवरण 27 और 28।

यदि आप आज्ञाकारी हैं, तो आपको ये आशीर्वाद मिलेंगे। यदि आप अवज्ञाकारी हैं, तो अनुमान लगाइए कि क्या होने वाला है? तो शायद शैतान सही है। अय्यूब के आज्ञाकारी होने के पीछे कारण यह है कि परमेश्वर ने वास्तव में उसके चारों ओर एक बाड़ बना दी है, परमेश्वर ने उसे आशीर्वाद दिया है, अय्यूब यह जानता है, और वह परमेश्वर का भय मानता है और बुराई से दूर रहता है।

किताब बंद करो, कहानी खत्म। हाँ या नहीं? या आज्ञाकारिता के लिए अन्य उद्देश्य भी हो सकते हैं? हाँ, हम सभी के पास हैं क्योंकि हम जैसे हैं वैसे ही हैं, और वाचा मूल रूप से उसी के लिए अपील करती है; हमारे पास आत्म-सुरक्षात्मक उद्देश्य हैं। और अगर हम जानते हैं कि कुछ बहुत ही जघन्य पाप करने से परमेश्वर का न्याय और दंड आने वाला है, अगर हम समझदार हैं, तो हम इससे बचेंगे।

तो, ये स्पष्ट उद्देश्य हैं। लेकिन क्या अन्य कारण भी हैं? कैसिया? और अय्यूब को इसकी परवाह नहीं है। और वह परवाह करता है, है न? अध्याय दो के अंत में, जब उसकी पत्नी मूल रूप से उससे कहती है, तुम भगवान को कोसते क्यों नहीं और मर जाते? वह कहता है, क्या हमें भगवान से अच्छाई स्वीकार करनी चाहिए और परेशानी नहीं? ठीक है, और इसलिए आप सही हैं, मुझे लगता है कि इसका बहुत कुछ अय्यूब के गहरे रिश्ते से जुड़ा है।

उसका ईश्वर के साथ रिश्ता है। यह सिर्फ एक जज नहीं है जो उसे पीट रहा है, और फिर वह उससे डरता है। उसका ईश्वर के साथ रिश्ता है, और यह प्रेम का रिश्ता है, और उस प्रेम से आज्ञाकारिता प्रवाहित होगी।

और, बेशक, जब आप इस पुस्तक और अध्यायों को पढ़ते हैं, और विशेष रूप से अय्यूब ने इन काव्यात्मक अध्यायों में जो कहा है, तो जो बात उसे सबसे ज़्यादा दुखी करती है, वह यह है कि

उसने ईश्वर के साथ रिश्ते की भावना खो दी है, और वह इसे वापस चाहता है। वह वास्तव में इसे वापस चाहता है। खैर, यहाँ कुछ और सवाल हैं, और हम उन पर इतना समय नहीं बिताएँगे क्योंकि आज हमारे पास कुछ और काम हैं। इन दोस्तों की प्रतिक्रियाओं में इतना अनुचित क्या है? और आपको यह जानना होगा कि वे कौन हैं।

एलीपज, बिलदाद और सोफर, है न? आखिरकार, उन्हें न्याय के बुनियादी सिद्धांतों पर अच्छी पकड़ है। सुज़ाना। एक बहुत बड़ा मज़ाक था, वे कह रहे थे, वह किसके लिए खड़ा है? आपने ऐसा क्या किया है जिसके लिए आपको यह सब करना पड़ रहा है? और मुझे लगता है कि यह गलत है, कि हम सिर्फ़ उनके रुख के कारण ऐसा कर सकते हैं, कि हम ऐसा कर सकते हैं, भले ही वह कुछ ऐसा हो जो उन्हें पसंद हो।

तो, दूसरे शब्दों में, उनकी पूरी समस्या उनका धर्मशास्त्र नहीं है, जो सही है। मेरा मतलब है, ब्रह्मांड में न्याय की भावना है। बेहतर है कि ऐसा हो, वरना हम बड़ी मुसीबत में पड़ जाएंगे।

लेकिन उनकी समस्या यह है कि उन्होंने इसे गलत तरीके से लागू किया है। क्या ऐसा कहना उचित होगा? और इसलिए, आप कह रहे हैं कि वे भगवान के लिए बोल रहे हैं। यह कहने का अनुचित तरीका है।

वास्तव में, किडनर ने एक जगह कहा कि दोस्त जो गलत कर रहे हैं, वह है उपदेश देना। और, बेशक, आप जानते हैं कि पोप क्या होता है। क्या आप जानते हैं कि पोप क्या होता है? आह, ठीक है, हमें शायद पोपटेट को परिभाषित करने की आवश्यकता है, है न? पोप क्या है? क्या कोई जानता है कि पोप क्या होता है? यह राजा और पोप जैसा है।

दरअसल, पोप। हाँ, ठीक है। मेरा मतलब है, यह कोई ऐसा व्यक्ति है जो धर्म की पूरी व्यवस्था के संदर्भ में ईश्वर की ओर से बोलता है। पोप ऐसा करता है।

इसलिए, जब आप उपदेश देते हैं, तो आप मूल रूप से, जैसा कि आपने अभी कहा है, यह स्पष्ट करने का काम अपने ऊपर ले रहे हैं कि आप इस मामले में भगवान क्या कहेंगे। और यह, ज़ाहिर है, उनकी समस्या है, क्योंकि वे वास्तव में नहीं समझते कि काम कहाँ है। और वे, मेरा मतलब है, वे धीरे-धीरे शुरू करते हैं, और हम इस बारे में थोड़ी देर में बात करेंगे।

वे वास्तव में धीरे-धीरे शुरू करते हैं। वे चीजों के अंत में वास्तव में कठोर हो जाते हैं। खैर, यह दिलचस्प है।

अय्यूब अपने दोस्तों के प्रति कैसा व्यवहार करता है? क्या आपने आज के लिए जो कुछ पढ़ा है उसे पढ़ते समय कुछ नोटिस किया? क्या वह दयालु है? वास्तव में नहीं। एक बिंदु पर, एसेंस उन्हें बकवास करने वालों का समूह कहता है। और मूल रूप से, यह कहता है, यदि आप मेरी जगह होते, तो आप ऐसी बातें नहीं कहते जो आप कह रहे हैं।

तो, अपने दोस्तों को दिए गए उनके जवाब, और शायद हमें दोस्तों को उद्धरण चिह्नों में रखना चाहिए, ठीक है, यह वही है जो वे सुनने के हकदार हैं। लेकिन वह उनके साथ शब्दों को कम

नहीं करता है। मैं आपको सुझाव दूंगा कि वह ईश्वर की प्रकृति के बारे में उनसे किसी भी तरह से असहमत नहीं है।

वे दोनों सहमत हैं। वे दोनों, मेरा मतलब है, दोनों, जिनमें एक तरफ दोस्त और दूसरी तरफ अय्यूब शामिल हैं, उचित रूढ़िवादी धर्मशास्त्र की अच्छी समझ रखते हैं। उन दोनों के पास यह है।

बस इतना है कि दोस्त इसे गलत तरीके से लागू करते हैं, और अय्यूब को समझ में नहीं आता कि यह उसकी वर्तमान स्थिति के संबंध में कैसे काम कर रहा है। यह भी दिलचस्प है। सुझाना, मैं वापस आकर तुम्हें थोड़ा परेशान करने वाला हूँ।

और यह कहने के लिए नहीं है, यह क्षमा करें। यह इसलिए है क्योंकि आपने कहा कि अय्यूब परमेश्वर की स्तुति कर रहा था। हाँ? खैर, मैं वास्तव में कठोर हो जाऊँगा और आपको थोड़ा धक्का दूँगा और पूछूँगा कि अध्याय 16 उसमें कैसे फिट बैठता है।

ठीक है? सातवीं आयत से शुरू करते हैं। निश्चित रूप से, हे परमेश्वर, तुमने मुझे थका दिया है। तुमने मेरे पूरे घर को तबाह कर दिया है।

पद्य नौ, परमेश्वर मुझ पर आक्रमण करता है, और वह क्रोध में मुझे फाड़ता है, और वह मुझ पर अपने दाँत पीसता है, और मेरा विरोधी मुझ पर अपनी तीखी निगाहें गड़ाता है। पद्य 11, परमेश्वर ने मुझे दुष्ट लोगों के हवाले कर दिया है और मुझे दुष्टों के चंगुल में डाल दिया है। मेरे साथ सब कुछ अच्छा था, लेकिन उसने मुझे चकनाचूर कर दिया।

उसने मेरी गर्दन पकड़ ली। उसने मुझे कुचल दिया। उसने मुझे अपना निशाना बनाया।

उसके तीरंदाज मुझे घेर लेते हैं। बिना किसी दया के, वह मेरे गुर्दे भेद देता है और मेरा पित्त ज़मीन पर गिरा देता है। बार-बार, वह मुझ पर टूट पड़ता है और एक योद्धा की तरह मुझ पर टूट पड़ता है।

मैंने अपनी त्वचा पर टाट सिल दिया है और अपने माथे को धूल में दबा लिया है। मेरा चेहरा रोने से लाल हो गया है, और मेरी आँखों में गहरे साये छा गए हैं। क्या यह प्रशंसा का गीत है? ठीक है, लेकिन? हमारे पास शाऊल है, इसलिए आप शाऊल को चुन सकते हैं।

यह ठीक है। लेकिन मुझे लगता है कि अगर ईमानदारी भी है और वह भी है, तो यह ऐसा है जैसे आप किसी ऐसे व्यक्ति से पूछ रहे हैं जो आपका दोस्त है, तुमने मेरे साथ ऐसा क्यों किया? अब, यह कोई तर्क नहीं है, लेकिन आप कह रहे हैं, जैसे, हम एक दूसरे से प्यार करते हैं। तुम क्यों, तुम मेरे पास से क्यों गुजर रहे हो? और ईमानदार होना और कहना, तुमने मेरे साथ ऐसा किया है।

तुमने मेरे साथ ऐसा किया है। हाँ, तुम सही हो। ईमानदारी निश्चित रूप से भगवान के साथ उसके रिश्ते के प्रदर्शन का हिस्सा है।

फिर से, मैं बार-बार उसी पर आता हूँ क्योंकि यह एक बहुत ही महत्वपूर्ण विषय है क्योंकि हम इस बारे में बात कर रहे हैं। और आपने मुझे फटकार लगाने में भी सही किया, हालाँकि आपने इसे उन शब्दों में नहीं कहा, इसे संदर्भ से बाहर ले जाने के लिए। क्योंकि जब आप, उदाहरण के लिए, अध्याय नौ या अध्याय 12 का समर्थन करते हैं, तो हम क्या देखते हैं? अय्यूब परमेश्वर की पूर्ण संप्रभुता को स्वीकार कर रहा है।

और यह प्रशंसा की घोषणा है। यह वास्तव में है। अय्यूब के पास जो है उसे मैं संप्रभुता का अधिकतमवादी दृष्टिकोण कहना चाहूँगा।

यह सिर्फ़ भगवान की संप्रभुता नहीं है और जब सब कुछ अच्छा होता है और हम इतने खुश होते हैं कि वह मेरे जीवन और ब्रह्मांड को नियंत्रित कर रहा है और मैं अपने अगले कदम के लिए उस पर भरोसा करने जा रहा हूँ। यह स्वीकार करना है कि वे बदसूरत चीजें, वे दर्दनाक चीजें, वे चीजें जो मेरे जीवन में विनाशकारी हैं, वे भी भगवान से आ रही हैं। इसका कोई उद्देश्य होना चाहिए।

मुझे नहीं पता कि वे क्या हैं। लेकिन आप सही कह रहे हैं। बड़ा संदर्भ स्पष्ट रूप से तस्वीर का हिस्सा होना चाहिए।

अच्छा। अच्छा, क्या मेरा एक और सवाल है? अच्छा, हम परमेश्वर की प्रतिक्रियाओं से क्या सीखते हैं? एक बार जब वह दृश्य में प्रवेश करता है, तो हम इन प्रतिक्रियाओं से क्या सीखते हैं? रेबेका। क्या आपने अय्यूब की कही बात की पुष्टि की? ठीक है, आगे बढ़ो।

ठीक है, तो ये मौखिक प्रतिक्रियाएँ, अध्याय 38 से शुरू होकर, अध्याय 41 तक जाती हैं, जिसके बारे में हम थोड़ी देर में और विस्तार से जानेंगे, परमेश्वर के पूर्ण नियंत्रण के बारे में कुछ कहती हैं, है न? परमेश्वर और किस तरह से प्रतिक्रिया करता है? वह उन काव्यात्मक प्रतिक्रियाओं में प्रतिक्रिया करता है। अध्याय 42 में वह क्या कहता है? अध्याय 42 में वह क्या करता है? अध्याय 42. मेट।

हाँ, तो भगवान क्षतिपूर्ति कर रहे हैं, है न? क्या यह दिलचस्प नहीं है? क्षतिपूर्ति किसने की? अगर हम टोरा में वापस जाएँ? कोई ऐसा व्यक्ति जिसने कुछ चुराया हो, है न? अगर आपने कुछ चुराया हो तो आपको दोगुना भुगतान करना पड़ता था। भगवान ने अय्यूब को उसकी सारी संपत्ति का दोगुना वापस किया। यह यहाँ एक बहुत ही दिलचस्प कथन है।

अब, अगली बात जो आप शायद कह सकते हैं, वह यह है कि, क्या दोस्तों ने सही नहीं कहा? यह खत्म हो गया है। भगवान ने अय्यूब को दोगुना आशीर्वाद दिया। अगर आप देखें, तो अय्यूब ने यहाँ विशेष कथन खोजने की कोशिश की है।

अध्याय 42, श्लोक छह। मैं खुद से घृणा करता हूँ, मैं धूल और राख में पश्चाताप करता हूँ। कुछ लोग इसे देखते हैं और कहते हैं, ठीक है, उसने पश्चाताप किया है। अब भगवान उसे सब कुछ चुका देता है और यह सब खत्म हो जाता है। दोस्त सही थे।

हाँ, नहीं? कोई भी उससे निपटना नहीं चाहता, है न? आगे बढ़ो, मैट। आह, बहुत बढ़िया। अध्याय 42, श्लोक सात और आठ में हमारे पास क्या है? अय्यूब बोल रहा है, क्षमा करें, और प्रभु एलीपज से बात कर रहे हैं।

मैं तुमसे और तुम्हारे दोस्तों से नाराज़ हूँ। तुमने कुछ नहीं कहा। अब, आगे जो है वह दिलचस्प है क्योंकि तुम NIV हो, और लगभग हर अनुवाद कहता है, तुमने मेरे बारे में सही बात नहीं कही, जैसा कि मेरे सेवक अय्यूब ने कहा।

और यह आठवीं आयत में भी यही बात कहेगा। तुमने मेरे बारे में सही बात नहीं कही, जैसा कि मेरे सेवक अय्यूब ने कहा। मैं बस यही बात तुम्हारे सामने रखना चाहता हूँ।

भविष्य में संदर्भ के लिए अपने बाइबल में एक छोटा सा नोट बना लें। हिब्रू में there का सबसे अच्छा अनुवाद किया गया है। इस क्रिया और पूर्वसर्ग का उपयोग करने का सबसे आम तरीका, बोले गए कुछ को to या unto के रूप में प्रस्तुत किया जाना चाहिए।

तुमने मुझसे वैसे बात नहीं की, जैसे मेरे सेवक अय्यूब ने की। तुमने मुझसे वैसे बात नहीं की, जैसे मेरे सेवक अय्यूब ने की। और हो सकता है कि परमेश्वर उस समस्या के लिए उनकी आलोचना कर रहा हो।

अय्यूब को आखिर किसकी तलाश थी? कोई ऐसा जो उसकी तरफ से मध्यस्थता करे। कोई ऐसा जो मध्यस्थ की भूमिका निभाए। दोस्त वहाँ बैठे उसे उपदेश दे रहे हैं।

वे कभी भी प्रार्थना नहीं करते। अय्यूब ही वह व्यक्ति है जो ईश्वर से बात कर रहा है और अपने रिश्ते को बनाए रख रहा है और ईमानदारी और बाकी सभी बातों के साथ इस पर कड़ी मेहनत कर रहा है जिसके बारे में हम बात कर रहे हैं। वैसे, शुरुआती अनुवादों में, सेप्टुआजेंट में बहुत पहले के यूनानी अनुवाद ने इसे ठीक से किया था।

तुमने मुझसे बात नहीं की। हिब्रू बाइबिल के अरामी अनुवाद भी यही बात कहते हैं। तुमने मुझसे बात नहीं की।

यह किसी तरह हमारी अंग्रेजी में है। वैसे, मुझे यह भी कहना है। जैसा कि आप जानते हैं, अनुवाद एक बहुत बड़ी समस्या है क्योंकि आप एक शब्द के जटिल, समृद्ध अर्थ को कैसे प्रस्तुत करते हैं और इसे दूसरी भाषा में लाने के लिए सिर्फ एक प्रतिनिधि शब्द चुनते हैं? मेरा सुझाव है कि वहाँ हिब्रू शब्द दोनों ही इसमें अंतर्निहित हैं।

टू, अबाउट, कंसीडरिंग, वगैरह। लेकिन टू-नेस, अनटू-नेस, मुझे लगता है कि हमें यहाँ कुछ देखने की ज़रूरत है। क्या मैं इससे सहमत हूँ? इसलिए, यही कारण है कि अध्याय एक पर वापस जाना महत्वपूर्ण है।

अय्यूब ने बहुत नियमित रूप से एक मध्यस्थ की मध्यस्थता की है। अय्यूब एक मध्यस्थ है। वह यह काम अपने परिवार के लिए कर रहा है।

वह जानता है कि यह कैसा दिखता है। उसके दोस्त बुरी तरह असफल हो जाते हैं। परमेश्वर उन दोस्तों को डाँटने जा रहा है कि वे अय्यूब के लिए मध्यस्थ या मध्यस्थ न बनें।

अब, इसके परिणामस्वरूप, अय्यूब को पता चलेगा कि उसका मध्यस्थ स्वर्ग में है, और यह और भी बड़ा एहसास है। लेकिन मैं सुझाव दूंगा कि यहाँ जो कुछ हो रहा है उसका एक हिस्सा वही है जो मैंने अभी आपको समझाया है। क्या मैं उससे सहमत हूँ? दिलचस्प बात यह है कि अब कई लोग हैं जो इसे इस तरह से व्याख्या करने के मामले में इस दिशा में जा रहे हैं।

तो, यह मेरी अपनी अकेलेपन की बात नहीं है जिस पर मैं जोर दे रहा हूँ। ऐसा करने वाला मैं अकेला नहीं हूँ। हमें शायद अब इस किताब के लिए थोड़ी और पृष्ठभूमि तैयार करने की ज़रूरत है।

ये सोचने वाली बातें हैं, सोचने वाले सवाल हैं। जब यह कहा जाता है कि अय्यूब उट्ज़ की भूमि से है, तो मुझे पता है कि आप चाहें तो इसे उज़ कह सकते हैं, लेकिन यह उट्ज़ है, है न? मुझे ठीक से पता नहीं है कि यह कहाँ है, लेकिन पवित्रशास्त्र के अन्य भागों में पर्याप्त समानताएँ हैं जो बताती हैं कि यह एदोम में है, एदोम के आस-पास कहीं, ठीक है? विलाप 4:21 एदोम के समानांतर उज़ का उपयोग करता है, और हमारे पास एलीपज नाम भी है, जो दोस्तों में से एक है, जो उत्पत्ति के अध्याय 36 में वंशावली में दिखाई देता है, जो एसाव के वंशज हैं। तो शायद हमें वहाँ कुछ संभावित स्थान मिल गया है।

यह पितृसत्तात्मक काल का संकेत हो सकता है। यह ज्यादातर मौन से तर्क है, लेकिन मैं इसमें एक और बात जोड़ना चाहता हूँ। कहानी के अंत में अय्यूब की उम्र कितनी है? क्या आपको इस तरह के कोई छोटे संकेत याद हैं? इन सबके बाद, अध्याय 42 में, अय्यूब 140 साल और जीवित रहा।

अब, अगर हम संख्याओं को गंभीरता से लेने जा रहे हैं, और फिर से, यह एक ऐसा सवाल है जिसे आपको खुद ही हल करना होगा, लेकिन अगर हम संख्याओं और उम्रों को गंभीरता से लेने जा रहे हैं, तो हमें बस यह याद रखना होगा, ठीक है, हे भगवान, अब्राहम 175 साल तक जी रहा है, और कुलपिता वास्तव में वहाँ हैं, है न? 187. तो यह हो सकता है कि अय्यूब का जीवनकाल संकेत देता है कि वह उस कुलपिता काल में कहीं स्थित होने जा रहा है, क्योंकि जब कहानी सामने आती है, तो उस आदमी के 10 बच्चे होते हैं। वह शहर के द्वार पर बैठता है और उसके पास अधिकार और सम्मान का पद है।

तो जाहिर है, वह अपने, मैं यहाँ अनुमान लगाने जा रहा हूँ, शायद 60 के दशक, 50 के दशक, 60 के दशक, 70 के दशक, कुछ इस तरह से है। तो यहाँ तक कि वह आयु अवधि, वह जीवन अवधि भी सुझाव देगी, फिर से, अगर हम इसे गंभीरता से लें, तो वह संभवतः पितृसत्तात्मक काल के दौरान रहता था। ऐसा कहने के बाद, मैं संभवतः सुझाव दूंगा, फिर से, कि भले ही यह इज़राइल के बाहर के दृश्य का प्रतिनिधित्व कर रहा हो, शायद एदोम में कहीं, और भले ही यह इज़राइल

की स्थापना से पहले की समय अवधि का प्रतिनिधित्व कर रहा हो, यह एक कथात्मक / काव्यात्मक रूप में आ सकता है।

दूसरे शब्दों में, यदि आप चाहें तो, यह पुस्तक एक अनुबंध समुदाय की छत्रछाया में एक पुस्तक के रूप में संकलित की जाएगी क्योंकि यह बहुत स्पष्ट है कि उद्धारक का यह पूरा विषय, उदाहरण के लिए, दिखाई देता है, और एक उद्धारक एक अवधारणा है जो अनुबंध का हिस्सा है। इतना जटिल सामान, हम तारीख और लेखक के सुझावों के बारे में बात करते हुए पूरा एक घंटा बिता सकते हैं, लेकिन मैं आपको बस यही बताऊंगा। शायद इस कथा और हमारे पास मौजूद कविता की एक लंबी मौखिक परंपरा के बाद, शायद इज़राइल के समय में ज्ञान साहित्य के सुनहरे दिनों के दौरान, और वह सुलैमान के आसपास होगा, यह पुस्तक एक साथ आई।

ऐसे लोग हैं जो इसे उससे बहुत बाद में रखते हैं, बहुत बाद में, लेकिन मुझे नहीं लगता कि हमें इस पर और अधिक समय बिताने की आवश्यकता है। अब तक, सब ठीक है? ठीक है, आइए इस पुस्तक की रूपरेखा के संदर्भ में कुछ और बातें करें। मैं पहले ही इस बारे में काफी बात कर चुका हूँ कि हम यहाँ कथात्मक रूपरेखा में क्या देखते हैं।

तो अब मैं आपके लिए गद्य के रूप में, हमारे प्रश्न के रूप के विपरीत, कुछ बातें दोहराना चाहता हूँ जिन पर मैं चर्चा के दौरान ज़ोर देने की कोशिश कर रहा था। अय्यूब का चरित्र स्थापित हो चुका है। यह वास्तव में महत्वपूर्ण है।

आपके पास इस पुस्तक के लिए एक कथात्मक रूपरेखा है, और पहले दो अध्याय इस बात पर ज़ोर देते हैं कि हम यहाँ एक ऐसे व्यक्ति के साथ काम कर रहे हैं जो एक धर्मी व्यक्ति है, और जैसा कि मैंने पहले ही कहा है, इस तथ्य को नज़रअंदाज़ न करें कि वह जानता है क्योंकि उसने खुद दूसरों की ओर से मध्यस्थता करने वाले व्यक्ति के रूप में काम किया है। वह उस भूमिका को जानता है। वह इसे अच्छी तरह से जानता है।

हमारे पास ईश्वर और शैतान के साथ स्वर्गीय दृश्य हैं, और मैं उनके बारे में पहले ही बात कर चुका हूँ। शैतान को अनुमति दी जा रही है, लेकिन ईश्वर यह कहकर बात को आगे बढ़ा रहा है, क्या तुमने मेरे सेवक अय्यूब पर विचार नहीं किया है? उसे देखो, वगैरह। हमारे पास उपसंहार भी है।

यह अध्याय 42 है, जिसमें मित्रों को फटकार लगाई गई है, और मैं दृढ़ता से यह नहीं कह सकता कि मुझे क्या लगता है कि इसका अर्थ अय्यूब के परमेश्वर के साथ संबंध और परमेश्वर द्वारा इसे स्वीकार करने के संदर्भ में क्या है। अय्यूब मित्रों के विपरीत परमेश्वर से बात करता है। अय्यूब की ओर से परमेश्वर से बात करने का अभाव या अनुपस्थिति।

अब, उस पूरी फटकार में एक और मुद्दा यह है कि क्या ये दोस्त वहाँ हैं और क्या अय्यूब ईश्वर के बारे में धार्मिक रूप से सही बात कह रहा है। यह एक अलग मुद्दा है। अगर हमारे पास कुछ और व्याख्यान होते, तो हम उस पर विचार कर सकते थे, लेकिन मैं इसे आपके लिए भी प्रस्तुत करूँगा, और फिर हमारे पास, जैसा कि मैंने कुछ क्षण पहले उल्लेख किया था, अय्यूब की बहाली है। मैं अय्यूब की बहाली के संबंध में बस सुझाव देना चाहता हूँ।

दूसरे शब्दों में कहें तो, भगवान उसे यह सब वापस दे रहे हैं, और यह धर्मी होने का बदला नहीं है। मुझे नहीं लगता कि यह ऐसा है। मुझे लगता है कि यह इस बात का संकेत है कि अब परीक्षा समाप्त हो गई है।

परीक्षा समाप्त हो गई, ठीक है? अय्यूब परीक्षा के दौर से गुज़रा है, और अब यह समाप्त हो चुका है, और अय्यूब को यह जानना चाहिए। याद रखें कि इन स्वर्गीय दृश्यों के बारे में कोई नहीं जानता। यह सिर्फ़ इतना है कि हम पाठक के रूप में जानते हैं।

हाँ, सुज़ाना। नहीं, हम नहीं जानते कि लेखक कौन है। मुझे कोई जानकारी नहीं है।

यह एक अच्छा सवाल है, और मैं सिर्फ़ इतना कह सकता हूँ कि नहीं। ठीक है। पुस्तक की संरचना के संदर्भ में, मैं अभी भी यहाँ कुछ चीज़ों को रेखांकित करने की कोशिश कर रहा हूँ।

अध्याय तीन अय्यूब का प्रारंभिक कथन है। याद रखें कि मित्र आ चुके हैं। मित्र शुरू से ही बहुत अच्छे हैं क्योंकि वे सात दिनों तक उसके साथ चुपचाप बैठे रहते हैं।

यह प्रभावशाली है। यह प्रभावशाली है, और वे उसे पहले बोलने की अनुमति देते हैं। उन्हें ऐसा करना ही पड़ता है।

यह पूरी सांस्कृतिक बात है। अय्यूब पहले बोलता है, और मैं चाहता हूँ कि आप उसकी कही कुछ बातों पर ध्यान दें। सबसे पहले, वह पूरी सृजित व्यवस्था को उलटने के लिए चिल्ला रहा है।

यही बात इन पहले 10 श्लोकों में कही गई है। मेरे जन्म के दिन को अंधकार और गहरी छाया से ढक लें। दूसरे शब्दों में कहें तो, सृष्टि की सुव्यवस्था का दिन।

वह मूलतः कह रहा है, इसे पूरी तरह से उलट दिया जाए। और उस संदर्भ में, वह निम्नलिखित कथन करता है। आठवाँ श्लोक।

जो लोग दिनों को या शायद समुद्रों को कोसते हैं, वे उस दिन को कोसें, और जो लोग जागने के लिए तैयार हैं, अगला शब्द क्या है? लेविथान। ठीक है। अब, सवाल यह होगा कि लेविथान कौन है और क्या है? उस पर बने रहें क्योंकि यह फिर से, निश्चित रूप से, अध्याय 41 में दिखाई देता है।

लेकिन अय्यूब पहले से ही संकेत दे रहा है कि वह इस लेविथान चरित्र के बारे में भी कुछ जानता है। और इसमें कुछ सुंदर, अच्छा, अशुभ है। खैर, फिर हमारे पास तीन काव्य चक्र हैं।

और मैं बस इतना ही कहूंगा। इनमें से प्रत्येक चक्र तनाव, क्रोध और हताशा के मामले में स्थिति को बढ़ाता है। पहला दोस्त, एलीफ़ाज़, बहुत अच्छी तरह से शुरू होता है।

अय्यूब, सोचो कि तुमने दूसरों को कैसे सांत्वना दी है। तुम एक अद्भुत व्यक्ति रहे हो। लेकिन फिर एलीफ़ाज़ कुछ ऐसा करता है जो वह आगे भी करता रहेगा, और वह है डर को बुलाना।

और उन्होंने चौथे अध्याय में यह दिलचस्प कथन किया है। एक वचन, श्लोक 12, चुपके से मेरे पास लाया गया। मेरे कानों ने इसकी एक फुसफुसाहट सुनी।

श्लोक 14, भय और कांप ने मुझे जकड़ लिया, मेरी सारी हड्डियाँ काँप उठीं। एक आत्मा मेरे चेहरे के पास से गुज़री। मेरे शरीर के रोंगटे खड़े हो गए।

वह रुक गया। मैं नहीं बता सका कि वह क्या था। मेरी आँखों के सामने एक आकृति खड़ी थी, और मैंने एक धीमी आवाज़ सुनी।

और यहाँ शांत आवाज़ ने क्या कहा। क्या कोई नश्वर परमेश्वर से ज़्यादा धार्मिक हो सकता है? क्या कोई मनुष्य अपने निर्माता से ज़्यादा पवित्र हो सकता है? अगर परमेश्वर अपने सेवकों पर भरोसा नहीं करता, अगर वह अपने स्वर्गदूतों पर ग़लती का आरोप लगाता है, तो मिट्टी के घरों में रहने वालों पर कितना ज़्यादा भरोसा होगा? दूसरे शब्दों में, एलीफ़ाज़ के पास अय्यूब पर पाप का आरोप लगाने का एक बहुत ही चतुर तरीका है।

यदि स्वर्गदूत भी पाप के आगे झुक जाते हैं, तो आप निश्चित रूप से केवल धूल और मिट्टी से बने हैं। और वह यह नहीं कह रहा है कि, ओह, मैं इसे अपने दिमाग से ही सोच रहा हूँ। उसे एक आत्मा के आने और उसे डराने तथा उसे यह संदेश बताने की पूरी कहानी मिलती है।

फिर, बेशक, वह सीधे अय्यूब के पास जाता है, और अय्यूब को बताता है कि यह उसके लिए परमेश्वर का वचन है। और बेशक, फिर वह आगे बढ़ता है और मूल रूप से कहता है, तुम परमेश्वर से अपील करो। अगर तुम सही तरीके से परमेश्वर से अपील करते हो, तो सब कुछ ठीक हो जाएगा।

लेकिन यह एक बहुत बढ़िया उपचार है, बहुत बढ़िया उपचार। एक बार जब आप दूसरे चक्र में पहुँच जाते हैं, और फिर तीसरे चक्र में, एलीफ़ाज़ मौलिक रूप से बदल गया है। दूसरे चक्र में, वह, अन्य दो दोस्तों के साथ, कहने जा रहा है, यहाँ पापियों के साथ क्या होता है।

और वे उन सभी भयानक चीजों के बारे में सोचते हैं जो पापियों के साथ हो सकती हैं। चीजें पूरी तरह से ग़लत होने जा रही हैं। मेरा मतलब है, बहुत डरावनी चीजें।

यह कुछ ऐसा है जैसे आपने कभी जोनाथन एडवर्ड्स की किताब, सिनर्स इन द हैंड्स ऑफ़ एन एंग्री गॉड पढ़ी हो, जो वैसे तो कोई बुरा उपदेश नहीं है। और यह बहुत बुरा है कि इसे बाकी सभी पुस्तकों से हटा दिया गया है क्योंकि जोनाथन एडवर्ड्स एक उल्लेखनीय उपदेशक थे। यह एकमात्र ऐसा उपदेशक है जिसका कोई भी व्यक्ति कभी उल्लेख करता है।

कुछ मायनों में, दोस्तों के दो भाषणों का एक चक्र हमें इसकी याद दिला सकता है। वे अभी भी सीधे तौर पर अय्यूब को समीकरण में नहीं रखते। वे बस इतना कहते हैं, यहाँ बताया गया है कि वास्तव में भयानक पापियों के साथ क्या होता है।

और, ज़ाहिर है, निहित संदेश यह है कि यह आप ही हैं। आप कबूल क्यों नहीं करते? जब तक हम तीसरे चक्र में पहुँचते हैं, एलीफ़ाज़ क्रोधित हो जाता है क्योंकि अय्यूब उस तरह से नहीं सोच रहा है जैसा एलीफ़ाज़ सोचता है कि अय्यूब को सोचना चाहिए। और इसलिए अध्याय 22 में एलीफ़ाज़ सीधे-सीधे अय्यूब पर सभी तरह के पापों का आरोप लगाने जा रहा है।

वह कहेगा, तुमने यह-यह और यह किया है। तुमने गरीबों के साथ दुर्व्यवहार किया है। तुमने इस तरह की सभी चीज़ें की हैं।

भयानक सामाजिक पाप। और दोस्त भी ऐसा ही करेंगे, हालाँकि जब तक आप तीसरे दौर में पहुँचते हैं, बिलदाद और ज़ोफ़र, बिलदाद का दौर वाकई छोटा है। वास्तव में, हमने आज सुबह इसका एक हिस्सा गाया।

वह केवल अध्याय 25 में बताई गई छोटी-सी बात कहता है, और फिर बिलदाद और सोफ़र के लिए यही सब है, जो कुछ भी कहने की हिम्मत नहीं करते। इसका खामियाजा एलीपज को भुगतना पड़ रहा है। और शायद इसीलिए एलीपज ही वह व्यक्ति है जो परमेश्वर की प्रतिक्रिया पर भी ध्यान केंद्रित करता है, क्योंकि वह वही है जिसने वास्तव में अय्यूब पर झूठे आरोप लगाए हैं।

अब, इस बारे में कहने के लिए बहुत कुछ है कि यह सब कैसे काम करता है। लेकिन मैं आपको जो सुझाव देना चाहूँगा वह यह है कि अय्यूब अपने मित्रों से कुछ दिलचस्प बातें कहने के बाद, परमेश्वर के पास वापस आ जाता है। और मैं सिर्फ़ तीन, तीन अंशों का उल्लेख करना चाहता हूँ जो अय्यूब द्वारा अपनी ज़रूरत को पहचानने के संदर्भ में महत्वपूर्ण हैं।

दिलचस्प बात यह है कि उनमें से प्रत्येक में परमेश्वर के विरुद्ध उसके कुछ सबसे प्रबल आक्रोशों का वर्णन किया गया है। है न? यदि आपके पास बाइबल है, तो पहले अध्याय नौ को देखें। अध्याय नौ में, वह संपूर्ण सृजित व्यवस्था पर परमेश्वर के संप्रभु नियंत्रण की एक बहुत ही गहन घोषणा के साथ शुरू होता है, जिसे परमेश्वर स्वयं अध्याय 38 में कहने जा रहा था।

लेकिन फिर वह आगे कहता है, आप जानते हैं, अगर मैं साफ़ भी होता, और साबुन से नहाता, तो भी यह श्लोक 30 और 31 है, आप, भगवान, मुझे कीचड़ के गड्ढे में डुबो देंगे, ताकि मेरे कपड़े भी मुझसे घृणा करें। लेकिन फिर वह कहता है, उसके ठीक बाद, श्लोक 33 में, अगर कोई हमारे बीच मध्यस्थता करने वाला होता, हम दोनों पर अपना हाथ रखता, कोई ऐसा होता जो भगवान की छड़ी को मुझसे दूर करता, तो मैं बिना किसी डर के बोल सकता था। जैसा कि अब स्थिति है, मैं नहीं बोल सकता।

अय्यूब एक मध्यस्थ की चाहत रखता है। अध्याय 16 में भी ऐसी ही बात होती है। मैंने पहले पढ़ा कि अय्यूब ने उस संदर्भ में परमेश्वर से क्या कहा, बहुत ही प्रभावशाली बातें, जो उसके साथ जो हुआ उसके लिए परमेश्वर की जिम्मेदारी को पहचानती हैं।

और फिर ध्यान दें कि वह क्या कहता है, अभी भी मेरा गवाह स्वर्ग में है, मेरा अधिवक्ता ऊपर है। मेरे दोस्त मेरा मज़ाक उड़ाते हैं; मैं अभी NIV नहीं पढ़ रहा हूँ; मैं दूसरा, बेहतर अनुवाद पढ़ रहा हूँ, मुझे लगता है। जैसे मेरे कान, आँखें भगवान के लिए आँसू बहा रही हैं।

लेकिन वह पहचानता है कि उसका गवाह स्वर्ग में है, उसका वकील ऊपर है। और फिर, बेशक, अध्याय 19 में, हम जानते हैं कि अगर हमने कभी हैडेल का मसीहा गाया है, तो मुझे पता है कि मेरा उद्धारक जीवित है। उसके बाद, वह धरती पर खड़ा होगा।

मेरी त्वचा के नष्ट हो जाने के बाद, मेरे शरीर से, मैं परमेश्वर को देखूँगा। मैं स्वयं उसे देखूँगा। अब, हम इसे कैसे समझते हैं, यह एक बहुत बड़ी बात है, जिसके बारे में मैं आपको ज्ञान साहित्य लेने के लिए आमंत्रित करता हूँ।

लेकिन वह जो कह रहा है, उसमें से एक बात यह है कि वह जानता है कि परमेश्वर उसका उद्धारक है। और वह परमेश्वर को देखेगा। वह जानता है कि वह परमेश्वर को देखने जा रहा है।

अब, ईसाई दृष्टिकोण से हम यह कहते हैं कि यह उसके मृतकों में से जी उठने के बाद होगा। मुझे लगता है कि अय्यूब को उस जीवन में उसे देखने की उम्मीद है। और, बेशक, ऐसा ही होता है क्योंकि परमेश्वर उसके सामने प्रकट होता है।

ठीक है, हमें यहाँ कुछ और बातें करनी हैं। अय्यूब, जब संवाद लगभग समाप्त हो जाता है क्योंकि दोस्तों के पास कहने के लिए और कुछ नहीं होता, तो अय्यूब को अपने बारे में और अपनी बेगुनाही के बारे में कुछ बातें कहनी होती हैं। और फिर यह दोस्त एलीहू आता है और चार अध्यायों में दोनों के बीच मध्यस्थता करता है।

एलीहू के बारे में और भी बहुत कुछ कहा जा सकता है। एलीहू के आने से भाषा अलग हो गई है। इसमें ज़्यादा अरामी भाषा है।

कोई आश्चर्य करता है कि वह वहाँ क्या कर रहा है। लेकिन वह वहाँ है, भले ही परमेश्वर कभी उसका जवाब न दे। मेरा सुझाव है कि एलीहू द्वारा किया गया सबसे महत्वपूर्ण काम परमेश्वर के प्रकट होने के लिए मंच तैयार करना है।

क्या आपने अय्यूब को पढ़ते समय इस पर ध्यान दिया? अध्याय 36 से शुरू करते हुए एलीहू ने बहुत सी अन्य बातें बताई हैं, फिर वह कहता है, परमेश्वर ने कहा, मैं श्लोक 27 में हूँ, बारिश की बूँदें, बादल, वर्षा, गरज, बिजली, बिजली, गरज आने वाले तूफ़ान की घोषणा करती है। गर्जना सुनो, और मैं अब अध्याय 37 में हूँ। गड़गड़ाहट, बिजली पूरे आकाश में गिरती है।

परमेश्वर की आवाज़ गरजती है, पाँचवाँ श्लोक। और वह पूरे अध्याय 37 में यही बात कहता है। वह क्या कर रहा है? परमेश्वर कैसे प्रकट होता है? अध्याय 38, तब प्रभु ने तूफ़ान से बाहर निकलकर अय्यूब को उत्तर दिया।

एलीहू की भूमिका का एक हिस्सा और यह कैसे काम करता है, मैं आपको बताने की कोशिश भी नहीं करने जा रहा हूँ। लेकिन जैसा कि हम इस पाठ को पढ़ रहे हैं, एलीहू की भूमिका का एक हिस्सा ईश्वर के प्रकट होने के लिए मंच तैयार करना है। वह आंधी की असाधारण शक्ति के बारे में बात करता है, और फिर ईश्वर तूफान में प्रकट होता है।

अब, ईश्वर की मौखिक प्रतिक्रियाएँ अध्याय 38 से 41 में हैं। और मैं इसे जल्दी से जल्दी पूरा करने जा रहा हूँ, क्योंकि मैं हमारे लेविथान की बात पर आना चाहता हूँ। आपको यह व्याख्यान रूपरेखा में मिल गया है, मुझे इस पर बहुत समय बिताने की ज़रूरत नहीं है।

और मैं पहले ही कह चुका हूँ। अय्यूब को परमेश्वर की संप्रभुता का गहरा अहसास है। वह यह भी कहेगा कि जहाँ तक उसका अनुभव है, दुख के इस दौर में परमेश्वर उसका विरोधी है।

और वह ऐसा ही कहेगा। फिर भी, परमेश्वर भी उसका वकील है, और हम उन्हें पहले ही पढ़ चुके हैं। अब, आइए देखें कि परमेश्वर अपने चार अध्यायों वाले मौखिक उत्तर में क्या कहने जा रहा है।

सबसे पहले, जब परमेश्वर तूफान में प्रकट होता है, तो वह अय्यूब को संपूर्ण सृजित व्यवस्था के दौरे पर ले जाता है। यह एक मौखिक दौरा है, लेकिन वह अय्यूब को इस दौरे पर ले जाता है। और यह एक अद्भुत दौरा है क्योंकि यह बाहर से काम करता है।

और आपको पता है कि इसमें क्या दिलचस्प है? क्या मैं यह कह रहा हूँ? हाँ। इसमें इंसानों का ज़िक्र ही नहीं है। बाकी सब चीज़ों का ज़िक्र है।

भगवान ने ब्रह्मांड को बनाया है। इसमें नींव रखने, इत्यादि के बारे में बताया गया है। भगवान समुद्र को नियंत्रित करने वाली दाई हैं।

समुद्र एक ऐसी चीज़ थी जिससे ये लोग बहुत डरते थे। भगवान समुद्र को एक बच्चे के रूप में प्रस्तुत करते हैं जिसका नियंत्रण उनके हाथ में है, अगर आप चाहें तो दाई का काम कर रहे हैं। आकर्षक कल्पना।

ईश्वर के सेनापति, सितारों को बता रहे हैं कि उन्हें क्या करना है, वगैरह। यह उनके सृजित व्यवस्था के दौरे का हिस्सा है। इसलिए, वह इस पर अपना नियंत्रण प्रदर्शित कर रहे हैं।

सभी जंगली जानवरों का संदर्भ। और इस प्राकृतिक सृष्टि की सुंदरता जिसे अय्यूब जानता है। और बेशक, यही मंच तैयार कर रहा है।

घोड़ों, शूतुरमुर्गों, चीलों और ऐसी ही अन्य चीज़ों का यह संदर्भ लेविथान के लिए मंच तैयार कर रहा है। क्योंकि लेविथान, बेशक, एक डरावना प्राणी है।

और अय्यूब को बहुत सारे सवालों का सामना करना पड़ता है। क्या आप लेविथान को नियंत्रित कर सकते हैं? बेशक, इसमें निहित है, भगवान कर सकते हैं। अब, यह कौन है? यह क्या है? खैर, आपके NIV में फुटनोट्स शायद कहते हैं कि यह एक मगरमच्छ है।

मुझे नहीं लगता कि यह सब इतना आसान है। शायद शुरू में। लेकिन जब आप इन दूसरे अंशों को देखते हैं, और बेशक, हमारे पास उन्हें देखने का समय नहीं है, लेकिन विशेष रूप से यशायाह के अध्याय 27, श्लोक एक, जहाँ यह प्रभु के बारे में बात करता है।

और यह यशायाह की भविष्यवाणी का हिस्सा है। इसे उसका छोटा सर्वनाश कहा जाता है। और यह परमेश्वर का न्याय है जो आने वाला है।

इसमें प्रभु की तलवार द्वारा उस कुंडलित सर्प, उस मुड़ते हुए सर्प जिसका नाम लेविथान है, से लड़ने की बात भी कही गई है। ठीक है? और ऐसे कई अन्य अंश हैं जहाँ हम लेविथान को किसी ऐसी चीज़ के प्रतिनिधि के रूप में देखते हैं जो ब्रह्मांडीय रूप से बुरी है। और मैं इसे यहीं समाप्त करूँगा।

क्या यह दिलचस्प नहीं है कि अथ्यूब की पुस्तक में, लेविथान पुस्तक के अंत में दिखाई देता है, न कि किसी ऐसी चीज़ के रूप में जिसे मनुष्य नियंत्रित कर सकते हैं, बल्कि स्पष्ट रूप से कुछ ऐसा है जो पूरी तरह से ईश्वर के नियंत्रण में है क्योंकि यह ईश्वर द्वारा बनाए गए आदेश के पूरे दौरे का हिस्सा है? और मुझे आशा है कि आपने देखा होगा कि शैतान फिर कभी नहीं दिखाई देता। किसी तरह, मैं सुझाव दूँगा, ईश्वर की प्रतिक्रिया में, वह लेविथान के अपने नियंत्रण में होने के इस विचार को हवा दे रहा है, और शैतान की आकृति जो पुस्तक की शुरुआत में, दृश्य के अध्याय एक और दो में इतनी शक्तिशाली और इतनी विनाशकारी थी, उसका उल्लेख करने की भी आवश्यकता नहीं है, क्योंकि ईश्वर उसका भी ध्यान रखेगा।

खैर, अभी बहुत कुछ कहा जाना बाकी है, लेकिन हमें रुकना होगा। इसलिए, मैं शुक्रवार को आपके कागजात लेकर या उन्हें भेजकर आपसे मिलूँगा।